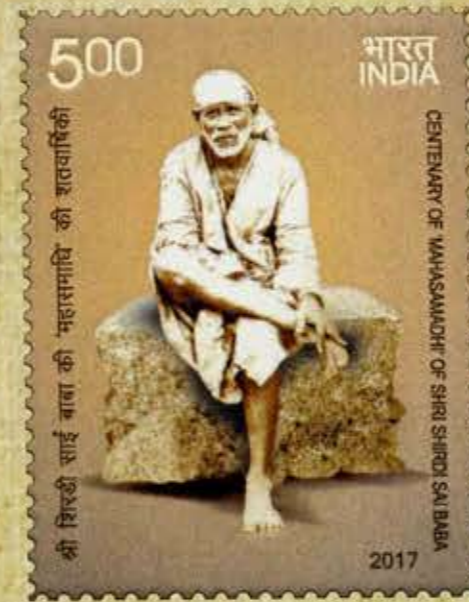




भारतीय डाक विभाग
DEPARTMENT OF POSTS
INDIA



श्री शिरडी साई बाबा की 'महासमाधि' की शतवार्षिकी
CENTENARY OF 'MAHASAMADHI' OF SHRI SHIRDI SAI BABA

विवरणिका
BROCHURE



Centenary of 'Mahasamadhi' of Shri Shirdi Sai Baba

Shri Shirdi Sai Baba was first seen in Shirdi as a youth in his teens, in the second half of the 19th century. He spoke in Urdu, Hindi, Marathi and some South Indian languages. He participated in Hindu and Muslim festivals. His approach in short, was universal and humanitarian.

By the 15th October 1918, when Shirdi Sai completed his earthly sojourn, Shirdi had turned from an insignificant village of Maharashtra into a spiritual haven, teeming with devotees, spiritual seekers, mendicants of different religions and celebrities like Shri Bal Gangadhar Tilak. Shirdi Sai Baba, the 'Sadguru' to the Hindus and a 'Fakir' (dervish) to the Muslims, was the axis around which the life of his devotees revolved. Many people, who have recorded their encounter with Shirdi Sai Baba in books and personal diaries, are unequivocal in their opinion – they were captivated by his divine charm and overcome by his compassion. He was the divine protector of all those who visited him, having accepted him as their spiritual guide. To Sai Baba, differentiation in fate and pedigree of the devotees made no difference. Visitors were at a loss to decide if his divine personality, full of miracles or his humaneness, full of compassion, was the more imposing, as he simultaneously displayed a surfeit of both.

As a result of his multi-dimensional activities – both temporal and spiritual – for the amelioration of his protégés, music, literature, folklore, drama and even

some amount of gossip filled the social environment of the village. Be it the construction of a temple or a house, the sickness of an individual, the education or rearing of children, the celebration of any religious or social festival, or the settlement of conflict, the Master's decision was the final word of wisdom and judgement. He stood between his devotees and suffering. Most of the villagers and the visiting populace willingly followed this way of living with Baba.

The devotees, born after the Samadhi of Baba, have only read about him, visited Shirdi, prayed at his tomb and some other places related to him. Yet, to them Baba truly exists and helps them in many ways. This is the reflection of the divinity in Shri Sai Baba of Shirdi. Shri Shirdi Sai Baba stood for inculcating the qualities of compassion, love and tolerance in all beings. He never preached, rather taught everybody through his actions.

Shri Shirdi Sai Baba entered Mahasamadhi on 15th October, 1918 (Tuesday). It was the day of Dussehra or Vijayadashmi. Various temples and organisations, dedicated to Shri Shirdi Sai Baba and the Shirdi Sai Movement, in India and abroad are organising centenary celebrations between October, 2017 to October, 2018.

Department of Posts is pleased to issue a Commemorative Postage Stamp on Shri Shirdi Sai Baba on the occasion of centenary of his Mahasamadhi.

Credits:-

Text : Based on the material received
from proponent
Stamp / FDC / Brochure : Smt. Alka Sharma
Cancellation Cachet

श्री शिरडी साई बाबा की 'महासमाधि' की शतवार्षिकी

श्री शिरडी साई बाबा, शिरडी में 19वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में एक किशोर युवा के रूप में पहली बार दिखाई दिए थे। वे उर्दू, हिन्दी, मराठी और कुछ दक्षिण भारतीय भाषाओं में बोलते थे। वे हिन्दू और मुस्लिम उत्सवों में भाग लिया करते थे। संक्षेप में, उनका दृष्टिकोण वैश्विक एवं मानवतावादी था।

15 अक्टूबर, 1918 में शिरडी साई बाबा की इह-लीला समाप्त होने तक, शिरडी, महाराष्ट्र के एक मामूली गांव से, अनेक भक्तों, आध्यात्मिक साधकों, विभिन्न धर्मों के साधुओं तथा श्री बालगंगाधर तिलक जैसे ख्याति-प्राप्त व्यक्तित्वों से भरी हुई आध्यात्मिक आश्रय-स्थली के रूप में परिणत हो चुका था। हिंदुओं के लिए 'सद्गुरु' एवं मुसलमानों के लिए 'फकीर' (दरवेश) माने जाने वाले शिरडी साई बाबा एक धुरी के समान थे, जिसके चारों ओर उनके भक्तों का जीवन परिभ्रमण करता था। अनेक लोग जिन्होंने पुस्तकों और व्यक्तिगत डायरियों में शिरडी साई बाबा से अपनी भेंट का उल्लेख किया है, निर्विवाद रूप से एकमत हैं कि वे श्री साई के दिव्य आकर्षण से आकर्षित एवं उनकी करुणा से अभिभूत थे। उन्हें अपना आध्यात्मिक पथ-प्रदर्शक मानकर जो भी उनके पास गए, वे उनके ईश्वरीय रक्षक थे। साई बाबा के लिए भक्तों की जाति, धर्म के भेद-भाव का कोई अर्थ नहीं था। चमत्कारों और मानवीय करुणा से सम्पूर्ण उनके दिव्य व्यक्तित्व की भव्यता को देख कर उनके पास आने वाला कोई भी भक्त निश्चित होकर उनके विषय में कुछ भी कह पाने में असमर्थ रहता था, क्योंकि ये दोनों ही गुण उनमें प्रचुर मात्रा में थे।

अपने आश्रितों की उन्नति के लिए श्री साई द्वारा किए गए सांसारिक एवं आध्यात्मिक बहुआयामी क्रिया-कलापों से गांव का सामाजिक वातावरण संगीत, साहित्य, लोक-साहित्य, नाटक और यहां तक कि गप-शप से भर उठा। चाहे वह मंदिर या घर का निर्माण हो, या किसी व्यक्ति की बीमारी हो, शिक्षा हो या

बच्चों का पालन-पोषण हो, या किसी धार्मिक या सामाजिक उत्सव का आयोजन हो, किसी झगड़े का निपटारा हो, सभी के लिए सद्गुरु श्री साई का निर्णय अंतिम और सर्वमान्य होता था। वे अपने भक्तों एवं दुःखों के मध्य खड़े रहते थे। अधिकांश ग्रामवासियों एवं शिरडी आने वाले अनेक लोगों ने बाबा के साथ इस प्रकार रहना स्वेच्छा से स्वीकार किया।

बाबा की समाधि के पश्चात जन्म लेने वाले भक्तों ने केवल उनके विषय में पढ़ा है, वे शिरडी गए हैं और उनकी समाधि तथा बाबा से संबंधित कुछ अन्य स्थानों पर प्रार्थना की है। फिर भी उनके लिए बाबा वस्तुतः जीवित रूप में विद्यमान हैं और वे अनेक रूपों में उनकी सहायता करते हैं। यही श्री साई बाबा में ईश्वर का प्रतिबिम्बित रूप था। शिरडी साई बाबा सभी प्राणियों में करुणा, प्रेम और सहनशीलता के गुणों को विकसित करना चाहते थे। उन्होंने कभी उपदेश नहीं दिए, अपितु सभी को अपने कर्म के द्वारा प्रेरित किया।

श्री शिरडी साई बाबा ने 15 अक्टूबर, 1918 (मंगलवार) को महासमाधि ली। वह दशहरा अथवा विजयदशमी का दिन था। श्री शिरडी साई बाबा एवं शिरडी साई के भाव-प्रवाह के प्रति समर्पित भारत एवं विदेशों के विभिन्न मंदिर एवं संस्थाएं अक्टूबर, 2017 से अक्टूबर, 2018 के मध्य शताब्दी वर्ष का आयोजन कर रहे हैं।

डाक विभाग, श्री शिरडी साई बाबा की 'महासमाधि' की शतवार्षिकी पर एक स्मारक डाक-टिकट जारी करते हुए प्रसन्नता का अनुभव करता है।

आभार:-

मूलपाठ : प्रस्तावक द्वारा उपलब्ध कराई गई सामग्री पर आधारित
डाक टिकट/प्रथम दिवस आवरण/ : श्रीमती अलका शर्मा
विवरणिका/विरूपण



तकनीकी आंकड़े
TECHNICAL DATA

मूल्यवर्ग	:	500 पैसा
Denomination	:	500 p
मुद्रित डाक टिकटें	:	600700
Stamps Printed	:	600700
मुद्रण प्रक्रिया	:	वेट ऑफसेट
Printing Process	:	Wet Offset
मुद्रक	:	प्रतिभूति मुद्रणालय, हैदराबाद
Printer	:	Security Printing Press, Hyderabad

The philatelic items are available for sale at
http://www.epostoffice.gov.in/PHILATELY_3D.html

© डाक विभाग, भारत सरकार। डाक-टिकट, प्रथम दिवस आवरण तथा सूचना विवरणिका के संबंध में सर्वाधिकार विभाग के पास है।

© Department of Posts, Government of India. All rights with respect to the stamp, first day cover and information brochure rest with the Department.

मूल्य ₹ 5.00

